चिन्ता करता है। माँ बच्चे का खयाल रखती है, वैसे ही हम पड़ोसी का खयाल रखें। सब मिलकर रहें, बाँटकर खायें, यही हमारा पैगाम है। कबीर साहब ने भी कहा है–"हाथ दिये कर दान रे।" कोई शख्स गाँव में दान दिये बगैर न रहे। सभी लोग देकर खायेंगे, बाँटकर खायेंगे तो गाँव सुखी होगा। गाँव के सभी बाल-बच्चों को घी मिलेगा।

कृष्ण भगवान मक्खन खाते थे। माँ कहती थी, अरे! यह मक्खन बेचना है। मथुरा शहर में मक्खन बेचकर पैसा लाना है। कृष्ण, श्याम कहते थे—"शहर में पैसा है और कंस भी है। शहर का पैसा कबूल करोगी तो कंस को भी कबूल करना होगा। क्या यह मंजूर है?" नहीं तो हम खेती करेंगे, मेहनत करेंगे और मक्खन खायेंगे।

आप लोग भी मक्खन बेचते हो। इससे किसानों के बच्चे कमजोर हो जायँगे। फिर खेती भी कमजोर होगी। इससे शहरवाले और उनके बच्चे भी कमजोर होंगे। इसलिए आपको घी-मक्खन गाँव के बच्चों को खिलाना चाहिए और खुद खाना चाहिए। ◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

रामगढ़ (जम्मू) ५-९-'५९

पाँच बातें

मैं आज आपके सामने पाँच बातें रखनेवाला हूँ।

(१) कश्मीर की सरकार ने यह योजना की है कि मुजारों को जमीन मिले, लेकिन इतने से काम नहीं होगा। मालिकों के पास जो जमीन थी, वह उन्होंने कानून बनने से पहले ही अपने भाई-बंदों में बाँट ली है और बची हुई जमीन सरकार के पास गयी, जो मुजारो में बँटी है। उसमें से बेजमीनों को कुछ भी नहीं मिली। इसलिए कश्मीर में भी यह बात बहुत जरूरी है कि यहाँके छोटे और बड़े सभी जमीनवाले अपने गरीब बेजमीन भाईयों के लिए अपनी जमीन का एक हिस्सा दान दें। जैसे अभी हम सब भक्ति में (मौन में) लीन हो गये तो एक बड़ा ही खूबसूरत नजारा पेश हुआ। वैसे ही सब लोग मिलकर एक काम करते हैं तो ताकत बनती है। इसमें प्रेम से देने की बात है। इसलिए जिसके पास एक कनाल जमीन है, वह भी आधा कनाल दान दे। आधे कनाल से क्या होगा, यह मत पूछो। उससे बहुत कुछ होता है। बहुत खुशी की बात है कि जबसे मैं यहाँ आया हूँ, तबसे बहुत लोगों ने जमीन दी है। इससे मुझमें यह विश्वास पैदा हुआ है कि यहाँपर यह काम चल सकता है।

(२) जमीन के लिए पानी की जरूरत है। पानी का इन्तजाम सरकार से ही करवाना होगा। इसलिए लोग सरकार का ध्यान इसकी तरफ खींचते हैं। वे ठीक ही करते हैं। लेकिन लोग एक होकर माँग करेंगे तो ताकत बनेगी। अगर वे कहेंगे कि हमने अपने गाँव में किसीको बेजमीन नहीं रहने दिया है। सबको जमीन दी है, गाँव का एक कुनबा बनाया है तो उनकी माँग का सरकार पर असर होगा और उनपर खुदपर भी असर होगा। इसलिए मेरा कहना है कि आप गाँव का एक कुनबा बनाकर काम करेंगे तो पानी का भी इन्तजाम होगा।

(३) जम्मू-कश्मीर राज्य में जमीन कम है। इतनी सी जमीन में सबका गुजारा नहीं हो सकेगा, इसलिए गाँववालों को कुछ हुन्नर, उद्योग सिखाने चाहिए। वे कई उद्योग कर सकते हैं। कम से कम कपड़ा बनाने का काम तो कर ही सकते हैं और वही कपड़ा पहन सकते हैं। कृष्णाबहन कह रही थी कि हम यहाँ गाँववालों से सूत कतवाते हैं, उसका कपड़ा बुनवाते हैं, लेकिन गाँववाले वह कपड़ा पहनते नहीं। इसलिए हमें वह कपड़ा बाहर बेचना पड़ता है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आपको यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपने गाँव का ही कपड़ा पहनेंगे, बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे। एक भाई ने पूछा कि खादी महँगी होती है, इसलिए उसे कैसे पहनें? मैंने जवाब दिया कि भाई! सोचो तो मिल के कारण जो लोग बेकार बने हैं, उन्हें खिलाने का खर्चा भी अगर मिलपर डाला जाय तो मिल का कपड़ा कितना महँगा हो जायगा? यह सोचा है? मिलवाला सबको खिलाने की जिम्मेवारी नहीं उठाता है। खादीवाला वह जिम्मेवारी उठाता है। इसलिए खादी से गरीबों का पालन होता है।

(४) एक भाई ने पूछा कि आप सारे हिंदुस्तान में घूम रहे हैं और १०-१५ दिनों से जम्मू में घूम रहे हैं तो यहाँके माहौल में आपने क्या खूसूसियत देखी? क्या खूबी और खामी देखी? मैंने यहाँपर देखा कि जैसे किसी परती जमीन में खूब खाद पड़ा हो, पर वह खोदी न गयी हो, उसमें बोया न गया हो तो उसको जोतने से उसमें खूब फसल उग सकती है, वैसे ही यहाँकी जमीन और माहौल हमें परती जमीन के जैसी लगी। इसमें खूब फसल आ सकती है। यहाँके लोगों में श्रद्धा है, उमंग है। यहाँके लोग बड़ी निष्ठा से हमारी सभाओं में आते हैं। वे समझते हैं कि बाबा आया है तो काम बनेगा। यह सब देखकर मेरा दिल पिघल जाता है। मैं क्या काम कर सकूँगा? भगवान से मेरा सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। मेरी उसीसे प्रार्थना है कि वह यहाँके लोगों को सद्बुद्धि दे और कश्मीर के मसले हल हों। यहाँके लोगों में मैं बड़ी उम्मीद देखता हूँ। यहाँ धर्म-श्रद्धा है, इसलिए धर्म का काम खूब बनेगा।

(५) यहाँपर गाँव-गाँव की सेवा के लिए सेवकों की जरूरत है। गाँव-गाँव में सेवक तैयार होंगे तो उन्हें अपने काम में सरकार के मुलाजिमों को भी मदद मिलेगी। लोग अपनी तरफ से तैयार होंगे, तभी काम बनेगा। यहाँ सीमा पर (पाकिस्तान की सीमा यहाँसे ६ मील दूर है) लश्कर और पुलिस रखी गयी है, सिर्फ उससे क्या होगा? गाँव-गाँव में झगड़े न हों, इसकी बहुत जरूरत है। गाँव-गाँव में गंदगी न हो, बीमारी न हो, झगड़े न हों, इसके लिए सेवकों की जरूरत है। कहीं झगड़ा हो जाय तो सेवक बीच में पड़कर झगड़ा मिटायें। वे उसके लिए मर मिटने की तैयारी रखें। गाँव से गाँव की सेवा के लिए ऐसा एक सेवक मिले तो जम्मू-कश्मीर में सचमुच ही स्वर्ग बनेगा। ◆◆◆

अनुक्रम

१. लोकमान्य की...	शालटेंग	१ अगस्त '५९	पृष्ठ ७४७
२. संगठित होकर आप...	फलीयाज़	२७ जून '५९	,, ७४८
३. अधिक अन्न उपजाने के लिए...	पीड़ा	२८ जुलाई '५९	,, ४४९
४. पाँच बातें	रामगढ़	५ सितम्बर '५९	,, ४५०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in